



DR. NEMNATH JAIN

Dr. Nemnath Jain is the Founder, Chairman of the Prestige Group of Industries and Prestige Group of Educational Institutions. But his journey from being a migrant to a millionaire and from a millionaire to the Chairman of Madhya Pradesh's one of the largest business conglomerates has not been just a rollercoaster ride, rather it has been full of challenges and struggles.

2. Dr. Jain was born on 17th September, 1931 in Rawalpindi in the then undivided India. After India's long fought Independence, his family was among thousands of families who suffered the pangs of partition and migrated to India. He was just a 16-year-old boy when he migrated to Delhi, India along with his family and finally settled in Indore from where he did his schooling and completed his engineering from the prestigious engineering college — SGSITS. He had the privilege of being a student of the first batch (1950-53) of this pristine engineering college and being a topper of his batch. After completing his engineering diplomas, he worked in textile and other industries for almost 30 years holding position from an apprentice to the position of CEO of a foreign collaborated company.

3. But with his inherent entrepreneurial spirit, his yen to do something different, his desire to become a job provider instead of being a job seeker, prompted Dr. Jain to resign from his job in the corporate world. In 1977, he initiated himself into an uncharted territory of industry by setting up a small scale cattle feed manufacturing unit and by 1985; he was the promoter of 3 solvent extraction plants, 2 edible oil refining units and an LPG cylinders manufacturing unit set up under the brand name - Prestige.

4. In 1986, Dr. Jain was elected as chairman of the Soybean Processors Association of India (SOPA). In 1985, India experienced extreme drought which adversely affected the soy industry including the farm sector. As chairman of SOPA, he initiated a movement to grow soybean for prosperity by engaging the best scientists and developing new techniques for the soy farming, leading to doubling of soybean production. With his global orientation towards foreign trade and contacts in the agri-industry, he has been instrumental in opening the doors for foreign exchange earnings through exports of protein-rich unique Non-GMO variety of soy meal value-added products. This literally proved to be a great boon for those engaged in soy farming, thereby bringing prosperity to millions of farmers in Malwa, Nimar and surrounding regions in Madhya Pradesh. It was because of his untiring efforts which made Madhya Pradesh the largest producer of soybean in India and the sobriquet of "Soybean State of India".

5. Dr. Jain has received various honours and awards. It was because of its immense contributions to the soya industries and soya farming that he was conferred upon with the prestigious 'Udyog Patra' award in 1983 at the hands of the then Vice President of India, Shri Hidayatullahji and the 'Udyog Vibhushan award' in 1987 at the hands of the then President of India, Shri Zail Singhji. Later in the year 2000, he was presented with the 'Soy Man of the Millennium' Title by the leading journal 'Oils & Fats Today' in South Asia for his pioneering role in bringing about a revolution in soy industries of the country in mid-eighties.





डॉ. नेमनाथ जैन

डॉ. नेमनाथ जैन, प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज और प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स के संस्थापक अध्यक्ष हैं । एक प्रवासी से एक करोड़पति और एक करोड़पति से मध्य प्रदेश के सबसे बड़े कारोबार समूह के अध्यक्ष बनने की उनकी यात्रा आसान नहीं बल्कि चुनौतियों और संघर्षों से भरी हुई रही है।

2. डॉ. जैन का जन्म 17 सितंबर, 1931 को तत्कालीन अविभाजित भारत के रावलपिंडी में हुआ था। भारत की स्वतन्त्रता की लंबी लड़ाई के बाद, उनका परिवार उन हजारों परिवारों में से था, जो विभाजन की पीड़ा झेलते हुए विस्थापित होकर भारत आया था। वह जब अपने परिवार के साथ विस्थापित होकर दिल्ली आए थे तो केवल 16 वर्ष के किशोर थे। वे अंततः इंदौर में आकर बस गए। यहीं से उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की और प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज–एसजीएसआईटीएस से इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी की। उन्हें इस प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज के पहले बैच (1950–53) का छात्र होने और अपने बैच का टॉपर होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपना इंजीनियरिंग डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने वस्त्र और अन्य उद्योगों में लगभग 30 वर्षों तक एक प्रशिक्षु से लेकर साझेदारी वाली विदेशी कंपनी के सीईओ के पद पर काम किया।

3. उनके भीतर उद्यमशीलता की सहज भावना, कुछ अलग करने की चाहत और नौकरी मांगने की बजाय नौकरी प्रदाता बनने की अदम्य इच्छा ने डॉ. जैन को कॉर्पोरेट जगत में नौकरी से इस्तीफा देने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1977 में, उन्होंने एक अनछुए क्षेत्र में छोटे पैमाने पर पशु आहार निर्माण इकाई स्थापित करने की पहल की, और वर्ष 1985 तक वे 3 सोलवेंट निष्कर्षण संयंत्रों, 2 खाद्य तेल शोधन इकाइयों के प्रवर्तक बन गए और 'प्रेस्टीज' ब्रांड नाम के तहत एलपीजी सिलेंडर विनिर्माण इकाई स्थापित की ।

4. वर्ष 1986 में, डॉ. जैन को सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसओपीए) का अध्यक्ष चुना गया। वर्ष 1985 में, भारत में भीषण अकाल पड़ा जिसकी वजह से पूरे कृषि क्षेत्र के साथ साथ सोया उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । एसओपीए के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने सोयाबीन की खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों को शामिल करके और सोयाबीन उगाने की नई तकनीक तैयार करके समृद्धि की दिशा में एक नए अभियान का सूत्रपात किया। इससे सोयाबीन उत्पादन दोगुना हो गया। विदेशी व्यापार में अपनी वैश्विक दृष्टि और कृषि उद्योग में अपने संपर्कों के साथ, उन्होंने प्रोटीन–समृद्ध विशिष्ट गैर–जीएमओ किस्म के सोया खाद्य मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्यात के जरिए विदेशी मुद्रा कमाने का रास्ता दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । वस्तुतः यह सोया की खेती में लगे हुए किसानों लिए वरदान साबित हुआ और मध्यप्रदेश के मालवा, निमार और आसपास के क्षेत्रों के लाखों लोगों के जीवन में खुशहाली आई। उनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप मध्यप्रदेश भारत का सोयाबीन का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया और आज इसे ''भारत का सोयाबीन प्रदेश'' कहा जाता है।

5. डॉ. जैन को विभिन्न सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। सोया उद्योग और सोया खेती में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें 1983 में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला जी के हाथों प्रतिष्ठित 'उद्योग पत्र' पुरस्कार और वर्ष 1987 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री जैल सिंह जी के हाथों "उद्योग विभूषण" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उसके बाद, अस्सी के दशक के मध्य में देश में सोया उद्योग में क्रांति लाने में महती भूमिका के लिए दक्षिण एशिया की अग्रणी पत्रिका "ऑयल्स एंड फैट्स टुडे'' द्वारा वर्ष 2000 में उन्हें "सोया मैन ऑफ द मिलेनियम'' पुरस्कार प्रदान किया गया।